

Bhishma School of Indian Knowledge System

MA Course

संस्कृत भाषा परिचय

Lecture 1 – 10.10.2023

- Harshada Sawarkar

sawarkar.harshada123@gmail.com

-: संस्कृत भाषा के वैशिष्ट्य :-

देवभाषा, सुरवाणी

भाषा - √भाष् - बोलना, व्यक्त होना (व्यक्तायां वाचि) - एक ऐसा माध्यम जिसके द्वारा हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं। संकेत / हावभाव और भाषा में अंतर।

संस्कृत - वैदिक (वैदिक साहित्य की भाषा) और अभिजात (अभिजात संस्कृत साहित्य की भाषा)

संस्कृत व्याकरणकार - पाणिनि - अष्टाध्यायी

वैदिक और लौकिक दोनों के व्याकरण की रचना

व्याकरणनियमों से सुबद्ध भाषा - संस्कृत

भाषा पर विचार - वैदिक समय

चत्वारि वाक्-परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।

गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति॥

(ऋग्वेद, 1.164.45)

वाणी के चार स्तर हैं। विद्वान लोग इन्हें जानते हैं। तीन स्तर गुप्त होते हैं और चौथा हम मनुष्य बोलते हैं।

वाक् / वाणी

```
graph TD; A[वाक् / वाणी] --- B[परा]; A --- C[पश्यन्ती]; A --- D[मध्यमा]; A --- E[वैखरी];
```

परा

पश्यन्ती

मध्यमा

वैखरी

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया ।

मनः कायग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥

मारुतस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयते स्वरम् ।

- बोलने की इच्छा से आत्मा, बुद्धि से एकाकार हो जाता है और मन को इसके लिए प्रेरित करता है। मन शरीर-अग्नी को उत्तेजित करता है जो फिर मरुत (वायू) को प्रेरणा देता है। वायू छाती के आर-पार घूमता है और हल्की ध्वनी उत्पन्न करता है। यह वायू ऊपर की ओर जाता है, तालु से टकराता है, मुँह में लौटता है और अक्षर (ध्वनी) उत्पन्न करता है।

भारोपीय भाषा परिवार

```
graph TD; A[भारोपीय भाषा परिवार] --> B[भारतीय - इराणी भाषा परिवार]; A --> C[भारतीय - आर्य भाषा परिवार]; B --> D[प्राचीन भारतीय भाषाएँ]; B --> E[मध्ययुगीन भारतीय भाषाएँ]; B --> F[अर्वाचीन भारतीय भाषाएँ];
```

भारतीय - इराणी
भाषा परिवार

भारतीय - आर्य भाषा
परिवार

प्राचीन भारतीय
भाषाएँ

मध्ययुगीन
भारतीय भाषाएँ

अर्वाचीन
भारतीय भाषाएँ

प्राचीन भारतीय भाषाएँ – वैदिक और अभिजात संस्कृत

मध्ययुगीन भारतीय भाषाएँ – पाली और अन्य प्राकृत भाषाएँ

अर्वाचीन भारतीय भाषाएँ – मराठी, हिंदी, गुजराती आदि

-: वर्णमाला / मातृकापाठ :-

स्वराः - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ
Vowels ए ऐ ओ औ

व्यञ्जनानि - क् ख् ग् घ् ङ्
Consonants च् छ् ज् झ् ञ्
 ट् ठ् ड् ढ् ण्
 त् थ् द् ध् न्
 प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व् श् ष् स् ह्

ह्रस्व स्वर (Short Vowels) - अ इ उ ऋ लृ

दीर्घ स्वर (Long Vowels) - आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अल्पप्राण (Unaspirates) - क्, ग्, ङ् च्, ज्, ञ् ट्, ड्, ण् त्, द्, न्
प्, ब्, म्

महाप्राण (Aspirates) - ख्, घ् छ्, झ् ठ्, ढ् थ्, ध् फ्, भ् and ह्

अर्धस्वर (Semi-vowels) - य् र् ल् व्

ऊष्मन् (Sibilants) - श् ष् स्

कठोर वर्ण (Hard consonants) -

क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ्
प् फ्

मृदू वर्ण (Soft Consonants) -

ग् घ् ङ् ज् झ् ञ् ड् ढ् ण् द् ध् न्
ब् भ् म्

अनुनासिक (Nasals) -

ङ् ज् ण् न् म्

अभिजात संस्कृत में ऌ का उपयोग नहीं होता। ऌ का प्रयोग वैदिक भाषा में होता था किन्तु अभिजात में उसकी जगह पर ल् का प्रयोग किया जाने लगा।

क्ष और ज्ञ – इन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। उनका जिस क्रम से उच्चारण किया जाता है, उसी क्रम से वह लिखे जाते हैं -

क्ष – क् + ष्

ज्ञ – ज् + ञ्

क्ष और ज्ञ के बारे में इनके घटक मुश्किल से ही पहचाने जा सकते हैं। लेकिन भाषा में ऐसे मिश्रित व्यंजनों के प्रचुर उदाहरण हैं जहाँ हम दो घटकों को आसानी से पहचान सकते हैं।

उदाहरण –

ग् - ग् + न्

घ् - घ् + न्

द्य् - द् + य्

त्य् - त् + य्

क्त् - क् + त् + र्

क् - क् + र्

म् - म् + र्

विसर्ग और अनुस्वार

विसर्ग का चिह्न – ' : '

अनुस्वार का चिह्न – ' ँ '

विसर्ग और अनुस्वार का उच्चारण
स्वरादि अथवा स्वराश्रित
विसर्ग

काकः (कौआ)

मालाः (मालाँ)

कपिः (बंदर)

लक्ष्मीः (लक्ष्मी देवता)

साधुः (सज्जन इन्सान)

वर्षाभूः (मेंढक)

कवेः (कवी का)

रैः (संपत्ती)

भानोः (सूर्य का)

गौः (गाय)

अः आः इः ईः उः ऊः एः ऐः ओः औः